IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

भारत में युवा अपराध का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सीधी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava
Professor, Department of Sociology
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, (M.P.), India

सारंशः अपराध की परिभाषा देना एक कठिन कार्य है जो हब तक कोई भी लेखक सफलता पूर्वक नही कर सका है इसका कारण यह है कि वास्तव में दण्डनीय अपराध मौलिक रूप में स्थान विशेष की दण्डनीति पर निर्भर करता है। जो समय–समय पर समाज के उस सशक्त समूह द्वारा निर्धारित की जाती है। जो सुरक्षा तथा सुख–शांति बनाए रखने के लिये राज्य की प्रशासनिक शक्ति द्वारा उस व्यवहार को दबाने की क्षमता रखता है। अपराध एक ऐसा कृत्य है या कृत्य का लोप है जो सार्वजनिक विधि के उल्लंघन में किया गया हो। अठारह वर्ष सेकम आयु के युवाओं द्वारा की जाने वाली अपराधिक गतिविधियों को युवा अपराध कहा जाता है। ऐसे कई तरह के अपराध है जो युवाओं द्वारा किए जाते है।

मुख्य शब्दः समाज, अपराध युवा और प्रशासन

संदर्भ सूचीः

[1]. शर्मा, मंजू 2009 नारी के प्रति अत्याचार एवं मानवाधिकार, मार्क प्रकाशन, जयपुर पृ. 102
[2]. सिंह, रामगोपाल 2006 सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्स, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृ. 13
[3]. गुप्ता, राजेश 1994 डॉ. अंबेडकर और सामाजिक न्याय, दिल्ली पृ. 64
[4]. अखिलेश एस. 2014 भारत में नगरीय समाज, गायत्री पबिलेशन पृ. 172
[5]. नाराणी, प्रकाशनारायण 2012 कन्या भ्रूण हत्या और महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बुक इलक्लेव, जयपुर, पृ. 69
[6]. दैनिक भास्कर, दिनांक 27.08.2015